वेदों का स्वरूप और उसमें स्वराज्य का वर्णन

वेद भारतीय मनीषियों का विजयी निनाद जिन्होंने लोक कल्याण हेतु अध्यात्मिक तत्वों का चिंतन करते हुए नियती के चिरंतन तत्त्वों का उद्घाटन किया था। जिसमें सरलता, रूपक की अभिव्यंजना, कल्पना की सरस, सुकोमल कामनियता और भाव गरिमा है। 'वेद' का संक्षिप्त अर्थ है – श्रेष्ठ ज्ञान, उत्तम विचार, परम्परा का स्त्रोत, समस्त विद्याओं का गूढार्थ रूप तथा धर्म न्याय, आचार-विचार का उगमस्थान है। 'वेद' की व्युत्पत्ति इस प्रकार, "विद्यंते ज्ञयन्ते लगयन्ते सर्वे पदार्थाः विद्या वा अनेन अस्मिन् वा इति वेदाः।" 'विद्' धातु के करण और अधिकारक में घत्र 'प्रत्यय करके वेद' शब्दसिद्ध हुआ है। वस्तुतः वेदज्ञान वह है जो मानवमात्र के हित-अनहित कर्मों का बोध करता है, इसके साथ ही जो अपौरुषेय तथा ईश्वर प्रस्त है, जिसमें निरर्थक वाक्य नहीं है। इसी कारण स्वयं ऋचाओं में कहा गया है, "देवस्य प्रश्यमाव्यं नममार न जीर्यति"। "अर्थात् हे मानव ! तू ईश्वर के काव्य को देख, जो न कभी मिटता हे और न क्षीण होता है।

पाश्चात्य विद्वान वेदों को ईसा से ५,००० वर्ष पुराने मानते हैं। परंतु वर्तमान अनुसन्धानों से अब यह समय १०,००० वर्ष से भी पूर्व पहुँच चुका है। भारतीय विद्वान जेसे बालगंगाधर तिलक, डा. भण्डारकर आदि वेदों को अति प्राचीन मानते हैं। किन्तु महर्षि जैमिनी, शंकराचार्य तथा दयानंद आदि वेदों को अपौरुषेय मानते हैं। ऋग्वेद अग्नि ऋषि की आत्मा में, यजुर्वेद वायु ऋषि की आत्मा में, सामवेद आदित्य ऋषि की आत्मा में तथा अथर्ववेद अंगिरा ऋषि की आत्मा में प्रकट हुआ है। ऋग्वेद में ज्ञान, यजुर्वेद में कर्म काण्ड, सामवेद में उपासना काण्ड तथा अथर्ववेद में विज्ञान काण्ड है।

सृष्टि के आदि काल से वेदों का पठन-पाठन, श्रवण द्वारा ही होता था। अतः वे श्रुति कहलाते हैं।

मूर्धन्य विद्वानों व बुद्धिजीवियों ने वेदों का अध्ययन अत्यधिक सूक्ष्मता से नहीं किया। फलस्वरूप आज भी 'स्वराज्य' के सम्बन्ध में अनेकानेक भ्रांतियाँ हैं। आज भी यह मान्यता हैं कि 'राष्ट्र' एवं 'स्वराज्य' की अवधारणा सर्वप्रथम रोम अथवा यूनान में पनपी तथा भारत में श्री बालगंगाधर तिलक ने सर्व प्रथम 'स्वराज्य' मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है, घोषित किया है। वेदों का अध्ययन इन निरर्थक मान्यताओं व थोथी दलीलों को दूर करने में सक्षम है राज्य व्यवस्था का वर्णन वेद में विस्तृत रूप से किया गया है। ऋग्वेद अध्याय १३, सूक्त ८० को स्वराज्य सूक्त स्वराज्य के नाम से सम्बोधित किया जा सकता है इस सूक्त की ९६ ऋचायें "अर्चन्ननु स्वराज्यम्" शब्द से समाप्त होती हैं। उदाहरणार्थ प्रथम व अन्तिम ऋचा देखिए –

"इत्था ही सोम इन्मदे ब्रह्म चमार वर्धनम्।
शविष्ठ वज्रिन्नोजसा पृथिव्यानिः शाशो अहिम र्चन्ननु स्वराज्यम्"॥
यामर्थवा मनुष्पितादध्यद् धियमत्नत ।
तस्मिन ब्रम्हाणि पूर्वथेन्द्र उम्थासमग्मतार्चन्नु स्वराज्यम्"।
(१६)

स्वामी दयानंद ने इस मन्त्रों में आये 'स्वराज्य' अनर्चन का अर्थ इस प्रकार किया है। (स्वराज्य) अपने राज्य की (अनअर्चन) अनुकूलता से सत्कार करता हुआ (वर्धनम्) वृद्धि (चमार) किया

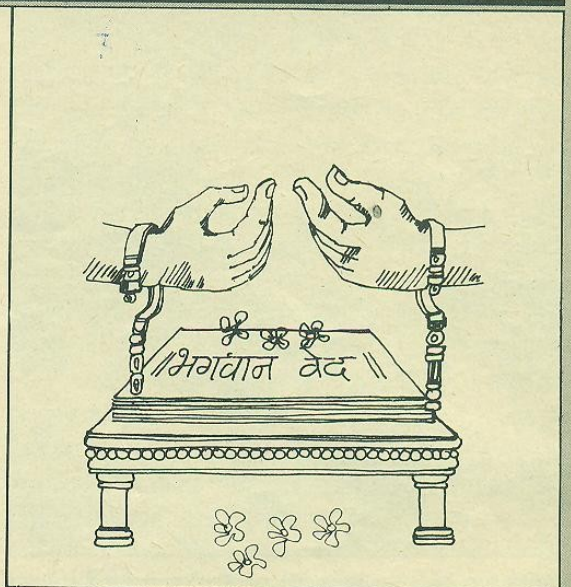

करें। स्वामी द्वारा किये गये भाष्य में इन ६ ऋचाओं द्वारा स्वराज्य का महत्त्व स्वराज्य को बनाये रखने के साधन तथा शासक व प्रजा के कर्तव्य का वर्णन है। ऋग्वेद मंडल १, अध्याय ११४ सूक्त ८४ की ऋचा संख्या १०, ११ व १२ के अन्त में भी स्वराज्य शब्द का प्रयोग हुआ है।

"स्वादो रित्था विषूवतो मध्वः पिबन्ति गौर्यः।
या इन्द्रेण सयावरी वृष्णा मदन्ति शोभ से व स्वीरनु स्वराज्यम्"॥१०॥
"ता अस्य पृशनायुवः सोम श्रीणंति पृश्नयः ।
प्रिया इन्द्रस्य धेनवो वज्रंमं हिन्वन्ति सायकंवस्वीरनु स्वराज्यम्"॥११॥
ता अस्यनमसासहः सपर्यन्ति प्रचेतमः ।
व्रतान्यस्य सश्चिरे पुरूणि पूर्वचित्तये वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥१२॥

स्वामी दयानंद ने 'वस्वीरनु स्वराज्यम्' का अर्थ (वस्वीः) पृथिवी (अनु) अनुकूल (स्वराज्य) अपना राज्य किया है। उन्होंने मोर्य का अर्थ निरुक्त के अनुरूप 'सूर्य की किरणे' किया है। तीनों मन्त्रों में उन्होंने स्वराज्य का अर्थ बताया है। अथर्ववेद काण्ड १०, सूक्त ७, मन्त्र ३१ में भी स्वराज्य का वर्णन है। यदजः प्रथमं संबभूवसहतत् स्वराज्य मियाय। यर-मन्नान्यत् पयमस्ति भूतम्। इसमें स्वराज्य को सर्वश्रेष्ठ माना है। स्वराज्य में सभी बराबर हैं, शासन के सामने कोई छोटा-बड.ा नहीं है। ऋग्वेद मंडल ५, सूक्त ६०, ऋचा ५ इस भावना को व्यक्त करती है। मन्त्र में स्पमृ है कि मनुष्यों में कोई बड. नहीं है, न कोई छोटा है। (स्तेआ॒तरः) ये सब भाई भाई हैं। इसी भावना को चरमबिन्दु पर पहुँचाने का कार्य अथर्ववेद काण्ड ३, सूक्त ३०, मन्त्र ६ में कर रहा है, "समानी प्रया सहस्त्रोऽन्न भागः समाने योकत्र सहवायुनज्मि। सम॒त्रचोऽग्नि सपर्यतारांना मिमिवामित ।" इस भाँति 'स्वराज्य' पर बहुत कुछ वेदों में निहित है। राष्ट्र क्या? इस संदर्भ में भी बहुत कुछ है वेदों में।